Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

समय सरगम : वृद्धावस्था वरदान या अभिशाप?

रंजना
शोधार्थी,
विश्व भारती (शांतिनिकेतन)

Article Info
Volume 4 Issue 1
Page Number: 43-51

Publication Issue :
January-February-2021

Article History
Accepted : 10 Jan 2021
Published : 22 Jan 2021

सारांश

अरण्या जो जीवन के अंतिम पडाव पर पहुंच कर भी अपने आप को हर समय ' सयानी' महसूस करती है। वृद्धावस्था जहां बुजुर्गों के लिए भय , आतंक , मृत्यु का इंतजार वाली जीवन का अंतिम छोर है वही अरण्या इसे अपने जीवन का अलग ही राग सोचती है और शेष जीवन को इच्छानुसार जीने का अधिकार समझती है। उसका कहना है कि जब तक जिंदा है जीवन की हर घडी का संगीत सुनना चाहिए ,यहीं ' समय सरगम' है। बुजुर्गों में उत्साह, आत्मविश्वास एवं चेतना जगाने में यह उपन्यास औषधि समान है।

मुख्यशब्दः – समय, सरगम, वृद्धावस्था, वरदान, अभिशाप।

इक्कीसवीं सदी में मनुष्य तरक्की करने के साथ ही साथ बहुत सारी समस्याओं का सामना भी कर रहा है। इनमें वृद्धों की तेजी से बढती जनसंख्या प्रमुख समस्या बन गई है । वृद्धावस्था तक आते–आते मनुष्य की शारीरिक क्रियाएं कमजोर या शिथिल पड जाती है और इसका सीधा प्रभाव उनके शारीरिक एंव मानसिक स्वास्थ्य पर पडने लगता है और धीरे– धीरे वे अकेले होने लगते है। परिवार भी उनका साथ नहीं देता है ।समस्या तब और भी ज्यादा बढने लगती है जब बुढापे को लोग घृणा की नजर से देखने लगते है क्योंकि सारा समाज एक साथ बुढा नहीं होता है। बुढापे के बारे में अमेरिका के जिस्ट होवेल ने कहा है कि – " बुढापा ऐसी ढलान नहीं जिस पर सभी समान रुप से फिसलते जाते हैं । वह ऐसी ऊबड – खाबड सीढियां हैं जिन्हें चढकर कोई जल्दी पहुंचता है तो कोई देर से"।[1] लेकिन 2000 में प्रकाशित " समय सरगम" कृष्णा जी की अनूठी रचना है जो बुजुर्गों लिए वरदान है। अपने इस सामाजिक उपन्यास में कृष्णा जी ने बुजुर्गों को जीने का नया तरीका सिखाया है । पुरानी और नई सदी के दो– दो छोरों को समेटता ' समय सरगम' जीए हुए अनुभवों की तटस्थता और सामाजिक परिवर्तन से उभरा एक अद्भूत उपन्यास है। आज के बदलते परिदृश्य में यह उपन्यास व्यक्ति की स्वाधीनता , उसके वैचारिक विस्तार और कुछ नए संस्कार को प्रतिध्वनित करता है। ये बुढापे में मिलने वाली उपेक्षा,

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अनादार , अकेलापन , उदासीनता , स्वार्थपरता की भावना से उबर कर जीने की कला सिखाने वाला जीवनाख्यान बना है। यह उपन्यास बुजुर्गों के लिए एक संजीवनी बूटी की तरह है। उपन्यास के सभी पात्र बुजुर्ग है , ईशान और अरण्या इस कथा के प्रमुख पात्र है ,जिन्होनें समाज में रह रहे बुजुर्गों के लिए एक नयी दिशा दिखाई है। इसके अलावा कामिनी, दमयंती , प्रभुदयाल जो बुजुर्ग पात्र है वे झेले गये समस्याओं का आईना है। ईशान और अरण्या के लिए सोबती जी ने बार–बार "सयाने" शब्द का प्रयोग किया है , जो इस बात का परिचायक है कि वे शरीर से तो बूढे है मगर मन तथा अपनी सोच से ये अभी भी "सयाने" है । उनमें अभी भी जीवन के प्रति उमंग एवं उत्साह भरा हुआ है। लेखिका ' सयानी' शब्द का प्रयोग करते हुए लिखती है कि – " खासतौर पर जब इस सयानी की कभी ताली गुम हो, कभी पर्स ,कभी जरसी। [2]

'समय सरगम' उपन्यास के मुख्य पात्र अरण्या और ईशान बूढे, पडोसी तथा अच्छे दोस्त है । बुढापे में अकेलेपन को दूर करने के लिए एक दूसरे के साथ समय व्यतीत करते है तथा जीवन की सुख– सुविधा का आनंद उठाते है । अरण्या एक ऐसी औरत है जो शरीर से तो बूढी है मगर मन से जवान है । वृद्धावस्था के इस पडाव में आकर भी जवान युवती की तरह अपना जीवन जीती है। वह एक खुशमिजाज किस्म की औरत है जो जीवन इस अंतिम पडाव में आकर भी जिंदगी को बोझ नहीं समझती , अपने आपको समाज के भीतर उपेक्षित महसूस नहीं करती , अकेलेपन की समस्या से अपने आप को बोझिल होने नहीं देती, बल्कि वे हर दिन अपने जीवन में एक नया उत्साह महसूस करती है । अरण्या अपने हर कार्य को स्फुर्ति तथा आनंद के साथ पूर्ण करती है। कार्य के प्रति सक्रियता देखकर ही लेखिका उनके लिए "सयानी" शब्द का प्रयोग करती है। "ए लडकी" उपन्यास की रचयिता कृष्णा सोबती जी भी लिखती है कि– " जीना और जीवन छलना नहीं। इस दुनिया से चले जाना छलना है" । [3]

ईशान भी एक बुजुर्ग पात्र है जो अरण्या के पडोसी है और अच्छे दोस्त है। अरण्या जहॉ बूढी अविवाहित औरत वही ईशान विधुर और अकेला, लेकिन अरण्या का अकेलापन अपनी इच्छा से है वही ईशान का अकेलापन परिस्थिति की उपज है। जीवन के अंतिम पडाव में आकर भी दोनो एक नवयुवक की तरह दोस्ती को निभाते है तथा एक दूसरे की जरुरतों का ख्याल भी रखते है। अरण्या शारीरिक रुप से शिथिल होने के बावजूद भी मानसिक रुप से काफी मजबूत है। वहीं ईशान कहीं–कहीं बुढापे की मानसिकता से ग्रसित है किंतु अरण्या का साथ उनकी छोटी– सी कालावधि में उत्साह भर देती है। अरण्या मृत्यु का सत्य जानकर भी डरती नहीं बल्कि वह उसे जीती है और यहीं संदेश समाज में रह रहे सभी बुजुर्गों को देती है कि वृद्धावस्था कोई अभिशाप नहीं बल्कि ये वरदान है ।

बूढे"सयानो" की टोली हर शाम एक छोटे से बगीचे में टहलती है और अपने सुख- दुख की बातें, करती है जिससे एक दूसरे के मन को हल्का करते है। बुजुर्गों का यह वर्ग अपने उम्र के लोगों पर हमेशा नजर रखती है और उनके दुखों को अपना दुख समझ कर निवारण करती है। अरण्या और ईशान भी हर शाम को मिलते है और पार्क में जाकर समय व्यतीत करते है । पडोसी होने के कारण एक दूसरे के घर जाकर भी समय काटते इस तरह से उनके जीवन में बुढापे का डर कम हो जाता है। अरण्या चाय बनाते हुए एक जगह कहती है बुढापे में अकेले रहने से व्यवस्था की कमी रहती है - " चाय का डिब्बा देख खाली ! अकेले का यही इंतजाम। चाय है तो चीनी नहीं , चीनी है तो दूध नहीं । तरतीब और व्यवस्था की कमी" । [4]

अरण्या और ईशान बिल्कुल अलग तरह के वृद्ध पात्र जिनकी विचारधाराएं , सोच घर- परिवार के दायरे से बिल्कुल स्वतंत्र है। वे पारिवारिक चिंतन से दूर देश दुनिया की सूचनाओं पर बातचीत करते है । अरण्या और ईशान के संवाद का एक उदाहरण देखा जा सकता है - " क्या आपने कोने वाली नारंगी गुलाब की क्यारी में एक छोटी-सी सांवले गुलाब पुत्रिका देखी है। नाम सुन्दर है गुलाब पुत्रिका! इस पहचान में कहीं स्त्रीत्व का दवाब तो नहीं। हो भी सकता है। पार्क का पुत्र समाज तो बहुसंख्यक है। हमें अल्पसंख्यकों की भी चिंता है। इसलिये पुत्रियों का पहचानना भी जरुरी है" । [5]

अरण्या कहीं भी घुमने जाती तो आस-पास के परिवेश पर भी उसकी निगाहें रहती- " सामने झुग्गियों के गुच्छाद समूह । सिरलुकाऊ ढलवां छतों पर नीले - पीले पोलीथीन - थिगलियोंवाले टाट, पत्थरों तले खुंसे हुए। सुरागों को बंद किए पीपे की झुग्गी में से बाहर फैलते सिगडी के गीले धुएं के साथ रोते बच्चे की आवाजें। अधगीले कच्चे फर्श पर पडे-पडे सूखा रोना। पानी चू रहा होगा । मॉ होगी पानी को रोकने की जुगाड में'' ।[6]

अरण्या अपने अकेलेपन को अपनी संपूर्णता मानती है । वह अपना जीवन अपने तरीके से जीती है । ईशान भी अपने अकेलेपन को संपूर्ण मानकर जीवन के रास्ते तय कर रहे है। दोनो कभी-कभी अकेलेपन से जब ऊब जाते है तो अलग - अलग जगहों की यात्रा पर निकल जाते है जिससे उनका मन बहल जाता है। " यह सोचकर कि बाहर जाना है ,मैं अपने में नया उत्साह महसूस करती हूं। सूट्केस सदा जाने को तैयार ! जानता हूं एक नहीं तीन-तीन ! यह कैसे जान गए आप ? मैं पुरानी तर्ज की रेलयात्री हूं । मेरी पूरी गृहस्थी मेरे साथ चलती हैं" ।[7]

ईशान और अरण्या दो ऐसे वरिष्ठ नागरिक है जो जीवन के सफर को अकेले करने में अपने जीवन की संपूर्णता मानते है । इस उपन्यास के दोनो सयाने पात्र अरण्या और ईशान अपने आस- पास की जिंदगियों की कहानी, नये और पुराने

पीढियों की दूरी , वृद्ध की जीवन शैली और उनसे जुडी समस्याओं पर अपने विचार रखते है। संयुक्त परिवार की समस्या , परिवार में वृद्ध जनों की स्थिति , उनकी मानसिक समस्या , उनका अकेलापन , उपेक्षिता की भावना , परिवार द्वारा उनके प्रति अमानवीय व्यवहार आदि समस्याओं पर गहन अनुभूति के साथ विचार किया गया है। चंद्रमौलेश्वर प्रसाद कहते है कि – " बुढापे को एक नयी दृष्टि से देखने की आवश्यकता है – एक ऐसी दृष्टि से जिसमें संवेदना हो और बूढों के लिए आदर व सम्मान का जीवन देने की आकांक्षा होनी चाहिए । "[8]

साहित्यकार कृष्णा सोबती जी ने अपने इस उपन्यास ' समय सरगम' में परिवार में पनप रही विभिन्न समस्याओं को परत–दर–परत खोलती है। आज कैसे नई – पीढी के बीच पुरानी पीढी का आस्तित्व समाप्त होता दिख रहा है। बुजुर्गों की अपनी इच्छा ,अनिच्छा का कोई सम्मान नहीं रह गया । तीन बेटों के परिवार में विधुर पिता प्रभुदयाल अपने घर ही में पराये हो गये । उनका गुमसुम कृपण स्वाभाव बच्चों का खलने लगा । परिवार धीरे–धीरे खुफिया खोज खबर लेने लगे बेटे अपनी पिता की संपत्ति हडप लेना चाहते थे । बहुएं भी पतियों का पूरा साथ देने लगी। " बडे बेटे ने व्यापार में जमी नई आंखो से बाप की पुरानी आंखो को तरेरा और शायस्तगी से कहा– बाबूजी, आपको अपने अकाउंट में से रुपया निकलना होगा'। [9]

प्रभुदयाल अपने ही परिवार के बीच कैद होकर रहने लगे , परिवार की तरफ धमकियां उन्हें आए दिन मिलती रहती है किंतु एक दिन यह धमकियां हमेशा के लिए शांत हो गई और वृद्ध प्रभुदयाल अपने पुत्रों के षडयंत्र का शिकार हो गए – " देहरादून , सहारनपुर और मेरठ से लौटते हुए प्रभुदयाल रास्ते में ही रह गए । पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के अनुसार उनकी मृत्यु गला घोंटने से हुई । शव मिला हिंडम से कुछ किलोमीटर आगे छप्पर के किनारे इमली के पेड तले .... जो होना था वही हुआ"।[10] पैसों के लिए उनका अपना ही परिवार , अपना ही खून ही उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

कामिनी और दमयंती दो ऐसी बुजुर्ग स्त्री पात्र है जो पारिवारिक षडयंत्र का शिकार हो जाती है। दोनो ही अपनी मेहनत , खून पसीने से घर बनाती है किंतु दोनो ही अपनों के हाथों शोषित होते हुए मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। कामिनी का परिचय देते हुए कृष्णा जी लिखती है – " बनारस,इलाहाबाद में पढी कामिनी की पोस्टिंग कभी लंदन में थी । पहचान थी उसकी सुंदरता। फुर्तीली और चुस्त । [11]

कामिनी ने अपना जीवन चकाचौंध और अफसरी की पदवी पर बिताया किंतु आज वही वैभव और धन उसके गले का फंदा बन गया । उसके अपने भाई – भाभी संपत्ति हडपने की फिराक में रहते । भाई बहन की पहरेदारी के लिए नौकरानी खूकू को तैनात करके रखता है ।भाई जब भी घर आता वहां के कागजात और दूसरी जरुरी चीजें उडा ले जाता

और बदले में असली की जगह फोटोस्टेट कॉपी रख देता। कामिनी को दी जाने वाली दवाइयों का भी ठीक जानकारी नहीं थी। क्योंकि उसको देखने के लिए दो–दो डॉक्टर आते थे । हर मंगलवार को भाई द्वारा बुलाया गया डॉक्टर आता था और वह डॉक्टर भाई के कहे अनुसार उसका इलाज करता था । यह सुनकर ईशान खूकू से पूछते है – " क्या नुस्खा पढ लेती हो कि दवा कब और कैसे देनी है ....खूकू गहरी सोच में कुछ देर खडी रही । फिर धीमे से कहा दो–दो डॉक्टर है, साहिब एक नहीं । हर मंगल को भाई लोग का डॉक्टर आता है जैसे कहता है मैं वैसा करती हूं । [12] (पृ0स0 99)

एक दिन कामिनी को दिल का दौरा पडता है और वह नर्सिंग होम में भर्ती हो जाती है। भाई भतीजे इकटठे तो होते है लेकिन उसका हाल–चाल पुछने के लिए नहीं वे वहॉ अपनी शिकायत लेकर गए थे कि अभी भी उन्होंने चेक काटकर नहीं रखा है। " परिवार से दूर छिटके अकेले वरिष्ठ नागरिकों की अपनी ही उलझने और समस्याएं । अपने स्वयं के आसपास घूमती रीति– नीति। अपने होने से जुडी है संभावनाएं और बूढी हो चुकी आकांक्षाएं । तन मन की ऊहापोह में झुंझलाते कभी शांत , कभी रोग बीमारी और चिंताओं से परेशान "[13]

हमारे समाज में उन व्यक्तियों की संख्या कम है जिन्होनें कभी परिवार नहीं बसाया लेकिन हमारा समाज उन्हें भी नहीं छोडता उन्हें भी अपने तरीके से तौलना शुरु कर देता है। आज भले ही युवा पीढी को अपने घर में रह रहे बुजुर्ग माता – पिता के लिए समय ना हो लेकिन पडोसी बुजुर्गों के लिये कटाक्ष करना नहीं छोडते । " परिवारों के बाहर हो जाने का कथानक और तर्क इससे बिल्कुल अलग है । अगर आप परिवार के बाहर खडे हैं तो परिवार के मिथक भी अपनी हदो से दूर तेवर चढाए घूरते रहते है । परिवार अब भी अंतर्संबंधों की नई– पुरानी तारीखोंवाला संस्करण मात्र" । [14]

' समय सरगम' उपन्यास में उद्धृत तीसरा प्रसंग दमयंती का है जो आकर्षक, समृद्ध और सांसारिक है। पति की मृत्यु के बाद उम्र के अंतिम पडाव में पहुंच चुकी दमयंती सफल व्यवहारिक , आकर्षक एवं मनमौजी जीवन जी चुकने के बाद अब वह साधु महात्माओं सा जीवन व्यतीत करती है । रेशमी वस्त्र धारण करने के बजाय अब वह सूती वस्त्र पहनती है । बेटो बहुओं भी अब अपनी मां इसी वस्त्र में ठीक लगती है । दमयंती अपने बहू– बेटों के व्यवहार से परेशान है । परिवार होते हुए भी भय, कुंठा, अनादर , उपेक्षा से ग्रसित है । दमयंती अरण्या को अपनी सक्रिय एवं सफल व्यवहारिक जीवन के बारे में बताते हुए कहती है –" मैं पहले सूती कपडा तन को न छुआती थी। एक दिन सत्संग के बाद मेरी गुरुजी ने टोक दिया अब सुफियाना से सूती जोडे बनवाये है। मेरे बेटो और बहुओं की सुनी । रेशम पहनूं तो कहते है ,इस उम्र में यह चमक–दमक अच्छी नहीं लगती। सूती पहनूं तो वह भी पसंद नहीं । कहते है इनमे आप हमारी मां ही नहीं लगती"। [15]

दमयंती के तीन – तीन बेटे है और उनकी पत्नियों है । दमयंती का परिवार आर्थिक रुप से सम्पन्न एवं समृद्ध है किसी भी चीज की कोई कमी नहीं है इसके बावजूद भी उसे देखने वाला कोई नहीं है उसकी स्थिति कामिनी से अलग नहीं हैं । अंतर केवल इतना है कि कामिनी के भाई– भाभी उसकी सम्पत्ति हडपना चाहते है, और दमयंती की अपनी स्वयं की संतान उसकी संपत्ति पर कब्जा चाहती है । वह एक जगह कहती है – " मैं तुम्हारी तरह अकेली होती तो क्यों परेशान होती ।खर्चा मैं कर रही हूं । और में अपने कमरे में अकेली पडी रहती हूं । बिना मेरी इजाजत मेरा सामान इधर–उधर करते रहते है । अरण्या , मैं बहुत दुखी हूं । पीछे आश्रम गई तो माधो का धमकाते रहे । बताओं , ममा लॉकर की चाबी कहां रखती है"। [16]

जिस घर को दमयंती ने अपनी मेहनत से सजाया , संवारा उसी घर की बैठक में अपने लिए तथा अपने किसी मित्र के लिए इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं थी ।"मैं वहां नहीं बैठ सकती, जबकि वहां का सब फर्नीचर , साज सामान मेरा अपना बनाया हुआ है । और मैं किसी बेजान काठ की तरह देखी जाती हूं"। [17]

ड्राइंग रूम में जब दमयंती ईशान और अरण्या के साथ बैठी , बातें कर रही थी , उसी समय दमयंती का मंझला बेटा अपने दो मेहमान के साथ ड्राइंग रूम में प्रवेश करता है और अपनी मां का बैठा देखा तो गुस्से को दबाकर कहा – " ममा , इन्हें अपने कमरे में ले जाइए । हमें कुछ जरूरी बातचीत करनी है" । [18]

बेटा मां की बेइज्जती उसके दोनो ' सयाने' मित्रो के सामने ही करता । दमयंती के लिए इससे ज्यादा तकलीफ की बात क्या हो सकती है । लेकिन इसके बाद भी पूरी हिम्मत जुटाकर बेटे का सामना तो करती है , लेकिन किसी भय की आशंका से घिर भी जाती है वह अरण्या और ईशान से मदद की आस करती क्या आस करने से कोई किसी की मदद कर सकता है–" क्या सचमुच कोई किसी की मदद करने के काबिल है ! तीन जोडे ठंडे हाथ। कहीं किसी में गरमाहट बाकी है क्या ! नए बच्चों का सामना करने की हिम्मत भी है ? ममता ! मां सिर्फ ममता है क्या ! क्या उसके अस्तित्व और व्यक्तित्व के सूत्र अब भी पिता , पति और पुत्र के हाथ में है" ।[19] दमयंती परिवार में अपने अस्तित्व को बचा नहीं पाई और महीने बाद ही उसकी मृत्यु की सूचना आरण्या और ईशान तक पहुंचती है ।

आज संयुक्त परिवार में वृद्धों की स्थिति एक अनुपयोगी वस्तु की तरह हो गई है। वे परिवार के लिए बोझ बन गए है । घर के सदस्य उनके सुख–दुख की चिंता नहीं करते, न घर के बेटे बहू उनकी सुध लेते है। आधुनिकता ने संयुक्त परिवार को बिखेर दिया है। और यह बिखराव एकल परिवार में परिवर्तित हो गए। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव ने एकल

परिवार को जन्म दिया । एकल परिवार में वृद्धों का स्थान शून्य के बराबर हो गया है। वे अपने ही परिवार उपेक्षित महसूस करते है । भय की आशंका उनके जेहन में हमेशा बनी रहती है। भारतीय पितृसत्तामक समाज आज भी स्त्रियों के लिए एक अलग सोच लेकर ही आगे बढ रही है। अगर कामिनी और दमयंती आर्थिक रूप से सशक्त नहीं होती तो उन्हें भी अपना शेष जीवन भाई और पुत्र के कृपा पात्र होकर ही जीना पडता है लेकिन परिस्थितिवश सशक्त होने के बावजूद भी उन्हें भाई पुत्रों के कहे अनुसार ही जीना पडा ।

'समय सरगम' की नायिका आरण्या बूढी अविवाहित औरत होने के साथ-साथ स्वालंबी भी है । वह आर्थिक रूप से सशक्त महिला है। जीवन में सबकुछ स्व- आर्जित है इसलिए उन्होंने अपने जीवन को अपने ढंग से जिया है । हर दिन को एक आशीर्वाद समझकर समय को सरगम की तरह जीवन जिया है। " आकाश में कहीं ऊचा सा कपाट दिखा था। लकडी की चौखट में खूब बडा दरवाजा जडा था। और उस पर जडी थी अरण्या की नाम पट्टिका। दरवाजे में छोटा सा कपाट खुला और अंदर से दिखा जाना पहचाना चेहरा! ठीक से देखो आरण्या, क्या यह झुरियोंवाला मुखडा तुम्हारा नहीं है ? ..... पर जान रखो.... इस चेहरे पर सताई हुई रेखाएं नहीं । समय के साथ उगी पकी है । अपने वक्त को खुद जीया है" ।[20]

अरण्या अकेलेपन को खुशी के साथ जीती है वह इसे बोझ नहीं लगता क्योंकि अरण्या ने अकेलेपन को स्व-अर्जित किया है । उनके पडोसी ईशान बुजुर्ग विधुर है । वे भी अकेले ही जीवन काट रहे है । अरण्या और ईशान के स्वभाव में भिन्नता होने के बावजूद भी दोनो अच्छे मित्र है और एक दूसरे की जरुरतों पूरा करते है । ईशान का अकेलापन परिस्थिति की उपज है लेकिन वे इस अकेले पन को अपने मित्र आरण्या के साथ उत्साह के साथ व्यतीत कर रहे थे। आरण्या मृत्यु की वास्तविकता को जानकर भी अपने जीवन के प्रति संतुष्ट है।

ईशान और अरण्या एक दूसरे से अलग होने के बावजूद भी पारिवारिक संबंधों पर खुलकर बातचीत करते है। ईशान का परिवार पर गहरी आस्था है वहीं अरण्या पारिवारिक संबंधों की तुलना पुरानी हो चुकी भाव गठरी से करती है, वह कहती है कि- " पारिवारिक घनिष्ठता से जी हुई पुरानी भाव गठरी बेमानी हो चुकी है । शायद इसलिए अपना पारिवारिक तानपूरा खामोश है"। [21]

ईशान अरण्या को परिवार के महत्त्व को समझाते हुए कहते है कि - " पारिवारिक संबंध गहरे होते है । छोटे - छोटे दबावों के बावजूद उनमें बहुत कुछ अच्छा और मूल्यवान होता है"। [22] ईशान द्वारा घर परिवार के प्रश्न पर आरण्या फिर कहती है कि - " बेटा हो चाहे बेटी , परिवार के हर सदस्य को इच्छ-अनिच्छा, उदासी-उल्लास को मनचाहे रूप से

रूपांतरित करने का अधिकार है" ।[23] ईशान फिर आरण्या को अपने अनुभव के आधार पर समझाते हुए कहते है कि – " परिवार सुरक्षा का नीड है , और एक दूसरे को सहारा देनेवाली एक घनी छांह भी । जीवन भी एकवर्णी नहीं है'। [24]

ईशान के विपरीत अरण्या को एक आधुनिक स्त्री के रूप चित्रित किया है जो पढी– लिखी होने के साथ आत्मनिर्भर भी है । वह जीने की कला को समझती है इसलिए उन्हें मृत्यु का डर सताता नहीं अपितु इस सत्य को स्वीकार कर हर क्षण खुशी के साथ जीती है । वह एक स्वतंत्र एवं सशक्त महिला के रूप में हमारे वृद्ध समाज का प्रतिनिधित्व कर रही है । ' समय सरगम' बुजुर्गों का दस्तावेज है किंतु इसमें सिर्फ बुजुर्गों का समस्याओं का उल्लेख बल्कि वृद्धों को आनंद एवं उत्साह के साथ जीने की कला सीखाती है ।

अरण्या जो जीवन के अंतिम पडाव पर पहुंच कर भी अपने आप को हर समय ' सयानी' महसूस करती है । वृद्धावस्था जहां बुजुर्गों के लिए भय , आतंक , मृत्यु का इंतजार वाली जीवन का अंतिम छोर है वही अरण्या इसे अपने जीवन का अलग ही राग सोचती है और शेष जीवन को इच्छानुसार जीने का अधिकार समझती है । उसका कहना है कि जब तक जिंदा है जीवन की हर घडी का संगीत सुनना चाहिए ,यहीं ' समय सरगम' है । बुजुर्गों में उत्साह, आत्मविश्वास एवं चेतना जगाने में यह उपन्यास औषधि समान है ।

संदर्भ सूची :

1. चंद्रमौलेश्वर प्रसाद – वृद्धावस्था विमर्श , परिलेख प्रकाशन , वालिया मार्केट , निकट साहू जैन कॉलेज , कोतवाली मार्ग , नजीवबाबाद , पृ0स0 24 .
2. कृष्णा सोबती – समय सरगम , राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1बी , नेताजी सुभाष मार्ग , दरियागंज , नई दिल्ली , पहला संस्क. 2008, दूसरी आवृति– 2014 , पृ0स0 9 .
3. कृष्णा सोबती – ए लडकी , राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. पहला संस्क. 2008, छठा संस्क. 2018, 1बी, नेताजी सुभाष मार्ग , दरियागंज , नई दिल्ली , पृ0स0 41 .
4. कृष्णा सोबती – समय सरगम , राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1बी ,नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज ,नई दिल्ली , पहला संस्क.2008 , दूसरी आवृति2014 , पृ0स0 16
5. वहीं – पृ0स0 14

6. वहीं – पृ0स0 18

7. वहीं – पृ0स0 35

8. वृद्धावस्था विमर्श – चंद्रमौलेश्वर प्रसाद , परिलेख प्रकाशन , वालिया मार्केट, निकट साहू जैन कॉलेज , कोतवाली मार्ग , नजीवबाबाद ,पृ0स0 20 .

9. कृष्णा सोबती – समय सरगम , राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1बी, नेताजी सुभाष मार्ग , दरियागंज , नई दिल्ली , पहला संस्क . 2008 ,दूसरी संस्क.2014, पृ0स0 110 .

10. वहीं – पृ0स0 112

11. वहीं – पृ0स0 94

12. वहीं – पृ0स0 99

13. वहीं – पृ0स0 106

14. वहीं – पृ0स0 92

15. वहीं – पृ0स0 71–72

16. वहीं – पृ0स0 74

17. वहीं – पृ0स0 74

18. वहीं – पृ0स0 75

19. वहीं – पृ0स0 77

20. वहीं – पृ0स0 8

21. वहीं – पृ0स0 63

22. वहीं – पृ0 स0 64

23. वहीं – पृ0 स0 65

24. वहीं – पृ0स0 65 .